भारत में कृषि

भारत में लगभग 70% आबादी कृषि से अपनी आजीविका कमाती है। भारत की भौगोलिक स्थिति कृषि के लिए अद्वितीय है। मैदानी क्षेत्रों, उपजाऊ मिट्टी, और जलवायु की स्थिति में व्यापक भिन्नता है.

भारत में खेती के प्रकार

देश में पश्चिम में जम्मू और कश्मीर से लेकर उत्तर-पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएँ हैं
भारत के पास भारत के गंगा के मैदान के रूप में दुनिया का सबसे बड़ा मैदानी क्षेत्र है। भूमि में भिन्नता के अलावा, देश में जलवायु की स्थिति, और मिट्टी के भी विभिन्न प्रकार हैं। कुछ प्रमुख प्रकार की खेती के बारे में नीचे चर्चा की गई है.

1. निर्वाह और वाणिज्यिक खेती

भारत में अधिकांश किसान निर्वाह खेती करते हैं। इसका मतलब है खुद की खपत के लिए खेती। इस प्रकार की खेती में, भूनिर्माण छोटे और खंडित होते हैं, खेती की तकनीकें आदिम और सरल हैं। इस खेती में किसान ज्यादातर अनाज के साथ-साथ तेल के बीज, दालें, सब्जियां और गन्ने की खेती करते हैं।
वाणिज्यिक खेती निर्वाह खेती के ठीक विपरीत है। इस मामले में, अधिकांश उपज पैसे कमाने के लिए बाजार में बेची जाती है। इस प्रणाली में किसान सिंचाई, रासायनिक खाद, कीटनाशक और बीज की उच्च उपज वाली किस्में आदि का उपयोग करते हैं। भारत के विभिन्न भागों में उगाई जाने वाली कुछ प्रमुख व्यावसायिक फसलें हैं कपास, जूट गन्ना, मूंगफली, आदि.

2. गहन और व्यापक खेती

इन दो प्रकार की खेती के बीच मूल अंतर भूमि की प्रति यूनिट उत्पादन की मात्रा है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और पूर्व यूएसएसआर के समशीतोष्ण क्षेत्रों की तुलना में यहाँ व्यापक खेती नहीं की जाती है.
जब हम खेती के लिए भूमि के बड़े टुकड़े का उपयोग करते हैं, तो हम इसे व्यापक खेती कहते हैं। गहन कृषि प्रति यूनिट भूमि के उत्पादन को रिकॉर्ड करती है। गहन खेती का सबसे अच्छा उदाहरण जापान में है जहाँ खेती के लिए भूमि की उपलब्धता बहुत सीमित है। इसी तरह की स्थिति केरल राज्य में भारत में देखी जा सकती है।

3. वृक्षारोपण खेती

इस प्रकार की कृषि में बिक्री के लिए शुद्ध रूप से उपयोग की जाने वाली एकल नकदी फसल की वृद्धि और प्रसंस्करण शामिल है। चाय, कॉफ़ी, रबर, केला और मसाले ये सभी वृक्षारोपण फसलों के उदाहरण हैं।

4. मिश्रित खेती

यह ऐसी स्थिति है जिसमें फसल उगाना और जानवरों को पालना दोनों एक साथ किए जाते हैं.

प्रमुख क्रांति

हरित क्रांति:

यह भारत में एक प्रमुख तकनीकी सफलता पर आधारित है
(i) उच्च पैदावार करने वाले बीजों में सुधार,
(ii) सिंचाई के लिए पानी की पर्याप्त और सुनिश्चित आपूर्ति, और
(iii) कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों की वृद्धि और उपयुक्त अनुप्रयोग.

श्वेत क्रांति:

यह दुग्ध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि और राष्ट्रीय दुग्ध जाल की स्थापना, क्षेत्रीय और मौसमी असंतुलन को दूर करने के लिए है। तकनीकी आदानों में से हैं:

(i) उच्च दूध देने वाली यूरोपीय नस्ल के साथ देसी गायों की क्रोस ब्रीडिंग;

(ii) दूध को लंबे समय तक रखने के लिए पास्चुरीकरण;

(iii) ग्रामीण क्षेत्रों में सदस्यों से गुणवत्ता वाले दूध का संग्रह; तथा

नीली क्रांति

यह ताजे पानी और समुद्री मछली पकड़ने में बड़ी वृद्धि को संदर्भित करता है।

पीली क्रांति:

यह कुक्कुट उत्पादों की उल्लेखनीय रूप से स्थिर और सुनिश्चित आपूर्ति को संदर्भित करता है.

गुलाबी क्रांति:

यह विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर राज्यों में सेब की मात्रा के उत्पादन में काफी वृद्धि को दर्शाता है.

फसल की तीव्रता बढ़ाने के उपाय

1. **सिंचाई:** उत्तरी राज्यों में फसल की तीव्रता बढ़ाने में सिंचाई की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जहाँ यह काफी बढ़ गया है.
2. **उर्वरक:** खोए हुए पोषक तत्वों को पुनः प्राप्त करने के लिए कुछ अवधि के लिए भूमि का पालन करने की आवश्यकता है, उर्वरकों का उपयोग करके और कुछ अन्य उपयुक्त फसल और रिले फसल के साथ तिरस्कृत किया जा सकता है.

फसल का चक्रिकरण: यह इस तरह से क्रमिक फसलों की उपयुक्त व्यवस्था है कि विभिन्न फसलें अलग-अलग अनुपात में या अलग-अलग स्तर पर पोषक तत्व निकालती हैं।

मिश्रित फसल: यह समान सिद्धांतों पर काम करता है.

रिले फसल: इसका अर्थ है एक साथ एक ही खेत में अलग-अलग पोषण अवधि के साथ विभिन्न फसलों की बुवाई और एक के बाद एक उनकी कटाई.

उपयुक्त पौध संरक्षण: इन उपायों में कीटनाशकों का उपयोग, सील उपचार, खरपतवार नियंत्रण, कृंतक नियंत्रण उपाय आदि शामिल हैं.